eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में परिवेश चित्रण

[1]डॉ0 शार्दूल विक्रम सिंह
[1] एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, जवाहरलाल नेहरू मेमोरियल पी0जी0 कॉलेज, बाराबंकी (उ0प्र0)

Received: 13 July 2020, Accepted: 27 July 2020, Published on line: 30 Sep 2020

Abstract

किसी भी कथा की पृष्ठभूमि को बनाने में परिवेश चित्रण का महत्वपूर्ण स्थान होता है। श्रीलाल शुक्ल जी ने भी अपने उपन्यासों की कथा को सशक्त एवं प्रभावशाली बनाने के लिए परिवेश चित्रण को विशेष महत्ता प्रदान की है। उन्होंने स्वातंत्र्योत्तर भारत में पनपती मूल्यहीनता, देश मे बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण, राजनीतिक स्थिति, शासनसत्ता, न्याय व्यवस्था तथा आम आदमी के जीवन की मूलभूत समस्या रोटी, कपड़ा, मकान आदि को परिवेश चित्रण के माध्यम से उद्घाटित किया है। परिवेश चित्रण से कथा के पात्रों की मानसिक दशा का भी पता चलता है।

Keywords- श्रीलाल शुक्ल के उपन्यास, परिवेश चित्रण, स्वातंत्र्योत्तर भारत, पनपती मूल्यहीनता, बढ़ता शहरीकरण, औद्योगीकरण, राजनीतिक स्थिति, शासनसत्ता, न्याय व्यवस्था तथा आम आदमी।

परिचय

परिवेश का शाब्दिक अर्थ परिधि से है। स्वातंत्र्योत्तर भारत के उपन्यासों में परिवेश चित्रण की विशेष प्रधानता रही है। अब्दुल बिस्मिल्लाह लिखते हैं कि ”उपन्यास के माध्यम से अपने समाज को और जीवन के विविध अनुभवों को गहराई के साथ अभिव्यक्त किया जा सकता है।“[1] वर्तमान में लेखक उपन्यासों में परिवेश चित्रण के माध्यम से क्षेत्र का यथार्थ जीवंतता के साथ प्रस्तुत करता है, जिससे कथा अधिक सशक्त और प्रभावपूर्ण होती है। डा0 लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के अनुसार उपन्यास से अब उपलब्धियों के आधार पर संभावनाएं अधिक रहती है। उसमें अनुभूति की प्रामाणिकता और परिवेश की प्रधानता खोजी जाती है न कि कथानक और चरित्र की प्रधानता। रचनाकार अपने उपन्यास में एक संवेदनात्मक सत्य व्यक्त करता है, जो व्यक्तिमूलक होते हुए समष्टिमूलक पद प्राप्त कर अपनी सार्थकता सिद्ध करता है।[2] आज परिवेश शब्द को व्यापक अर्थों में लिया जाता है। उसमें न केवल बाह्य वातावरण और देशकाल का चित्रण होता है, वरन वह सूक्ष्म जगत के चिन्तन से भी सम्बन्धित

होता है। वर्तमान में शहरी और ग्रामीण अंचलों के जीवन यापन एवं सभ्यता संस्कृति को परिवेश चित्रण के माध्यम से साकार किया जा रहा है।

स्वातंत्र्योत्तर भारत के उपन्यासकारों में श्रीलाल शुक्ल जी का स्थान विशेष महत्वपूर्ण है। वे एक प्रगतिशील साहित्य चेतना के उपन्यासकार माने जाते हैं। उनका प्रारम्भिक जीवन ग्रामीण परिवेश में तथा बाद का जीवन शहरी परिवेश में व्यतीत हुआ, जिससे वे ग्रामीण और शहरी दोनों जीवन के यथार्थ का अनुभव बहुत सहजता एवं सजीवता के साथ अपने उपन्यासों में चित्रित करने में समर्थ हुए हैं। "श्रीलाल शुक्ल जी अपने परिवेश और समाज से रूबरू थे, और अपनी पैनी दृष्टि से उसे देखते थे। हर युग में लिखा गया साहित्य, तत्कालीन सामाजिक परिवेश की भूमिका पर रचा जाता है। उसमें अपने समय समाज का अक्स साफ–साफ देखा जा सकता है। एक जागरूक साहित्यकार अपने समाज में व्याप्त विसंगतियों, विडम्बनाओं, परम्पराओं, संस्कृति आदि का साक्षी होता है, और उन्हीं में से अपने रचना कर्म के लिए कथ्य चुनता है।[3]

श्रीलाल शुक्ल जी ने स्वातंत्र्योत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्रों में गिरते मानवीय मूल्यों को अपनी रचनाओं के व्यंग्य के माध्यम से चित्रित किया है, जो वर्तमान भारतीय जीवन का यथार्थ है। उनके उपन्यासों में वर्णित परिवेश चित्रण को हम चार भागों में विभाजित कर अवलोकित कर सकते हैं–

1. प्राकृतिक परिवेश
2. सामाजिक परिवेश
3. राजनैतिक परिवेश
4. आर्थिक परिवेश

1. <u>प्राकृतिक परिवेश</u>

प्राकृतिक परिवेश में हम अपने चारों ओर विद्यमान प्राकृतिक वनस्पतियों, नदी, पहाड़, झरने, झील, जीव–जन्तु, मिट्टी, वर्षा, जल, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा आदि को शामिल करते हैं। जब कोई लेखक अपनी रचनाओं में प्राकृतिक परिवेश का चित्रण करता है तो इन प्राकृतिक उपादानों को उद्दीपन, आलम्बन, प्रतीक, अन्योक्ति अथवा मानवीकरण आदि के रूप में वर्णित करता है। उपन्यासों में प्रकृति

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

और मानव के बीच अन्योन्याश्रित सम्बन्ध दिखाने के लिए प्रकृति चित्रण का सहारा लिया जाता है। श्रीलाल शुक्ल जी के उपन्यासों में हम प्रकृति चित्रण को अनेक रूपों में देखते हैं। जैसे "अज्ञातवास" उपन्यास में रजनीकांत के पास अथाह धन–दौलत को प्रस्तुत करने के लिए लेखक प्राकृतिक उपमानों का वर्णन करते हैं। "एक मचलती हुए आवारा शाम, पागल हवाएँ, ऊँचे–ऊँचे पेड़ों की मजबूरी में बँधी, क्षितिज को पल्लवों से छूने के लिए चारों ओर उमड़ती बेसब्र टहनियाँ।" इस चित्रण में रजनीकांत के अवारापन, उसके धन–वैभव के घमण्ड को प्रतिपादित किया गया है। इसी उपन्यास में जब रजनीकान्त के जीवन में घोर निराशा और अकेलापन आ जाता है तो उसे लेखक प्रकृति चित्रण के अनेक प्रतीकों के रूप में चित्रित करता है। "कभी–कभी जान पड़ता है कि चारों ओर से फंस गया हूँ। सामने उजाला था उसे छोड़कर जहाँ आ गया हूँ, वहाँ अंधेरा है। चारों ओर पेड़ों के घने झुरमुट हैं जो राह रोकते हैं और अब सोचने की जगह पहले घेर चुका था, वे जंगल उस पार भी हमलावर हो रहे है।"[4] इसी प्रकार "पहला पड़ाव" उपन्यास में सन्तोष कुमार की बेकारी का कारण उसकी उदासीनता और निकम्मापन है, जिसे श्रीलाल शुक्ल जी ने इस प्रकार चित्रित किया है– "बाग बगीचा, आम, जामुन उमड़ती हुई घटा आदि के बावजूद वह मामला नहीं बन पा रहा है जो ग्राम गीतों और रसभरी ग्राम कथाओं की इमारतों में लगाया जाता है क्योंकि धरती में ऊसर फूट रहा है, वनस्पतियों को पीढ़ियों का निकम्मापन चर चुका था और भारत माता सचमुच ही मिट्टी **की प्रतिमा उदासायिनी बन गयी थी।**[5] इसी उपन्यास में संतोष जब शहर से अपने गांव वापस जाता है तो उसे यह आशा रहती है कि जिस प्रकार से मौसम बदल रहा है उसी प्रकार से उसके जीवन का मौसम भी बदलेगा। जिसका प्रकृति चित्रण लेखक इस प्रकार करते हैं– "अभी सात आठ दिन में आसमान बादलों से ढँक जायेगा। वे पेड़ के दौवारें में भीग रहे होंगे, तब मेरी जिन्दगी का मौसम बदलेगा। तपन के छोटे–छोटे धब्बे भले ही रह जायँ चारो ओर से बंधा हुआ दम घोंटू उमस का घेरा जरूर टूटेगा।"[6] उसे यह आशा है कि एक न एक दिन मेरी जिन्दगी का मौसम भी जरूर बदलेगा।

श्रीलाल शुक्ल के "सूनी घाटी का सूरज" उपन्यास में रामदास जब पढ़ाई के लिये गांव से शहर कानपुर जाता है तो उसे यह अनुभव होता है कि वह एक अज्ञात जीवन में प्रवेश कर रहा है।[7] जहां सब कुछ उसे नया लग रहा है। ''जुलाई का महीना था और बूंदाबाँदी हो रही थी, सवेरे सात बजे से ही हजारों की संख्या में जाते हुये मिल के मजदूरों गंगा स्नान के प्रेमियों की अपार भीड़ में मुझे अकस्मात् न जाने कैसा भय सा लगने लगा, कि मै एक नये किन्तु अज्ञात जीवन में प्रवेश कर

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

रहा हूँ।'' इसी उपन्यास में अन्यत्र ठेकेदारों द्वारा मजदूरों का शोषण किये जाने की स्थिति को दर्शाने के लिये प्रकृति का मानवीकरण रूप में चित्रण किया गया है। ''पश्चिमी क्षितिज के पास बहुत घने काले बादल इकट्ठा हो गये। पहाड़ियों के पीछे छिपते हुये सूरज की अस्तंग किरणें उन बादलों को भेदकर कहीं–कहीं फूट रही थी, लगता था कि वृक्षों के पीछे पहाड़ों के दूसरी ओर काले मेघों के गहन आवरण को ये ज्वालाएँ जला डालेंगी। बादलों की वह कालिका रक्तिम किरण, छितरी हुई पहाड़ियाँ, फैलती हुई छायाएँ, मै चुपचाप सब कुछ देखता रहा।''[8]

2. सामाजिक परिवेश

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके द्वारा ही समाज का निर्माण होता है। अच्छे तरीके से मानव के जीवन–यापन के लिए अनेक सामाजिक मूल्य होते हैं, जिनका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है। सामाजिक मूल्यों के अभाव में एक आदर्श समाज की कल्पना नहीं की जा सकती है। स्वतन्त्रता के बाद हमारे देश में सामाजिक, शैक्षिक, व आर्थिक विकास के लिए अनेक प्रयास किये गये। नई युवा पीढ़ी ने पुराने विचारों, रीति रिवाजों आदि का त्यागकर नई मान्यताओं एवं मूल्यों को ग्रहण किया। नये मूल्यों एवं नई शिक्षा व्यवस्था से जहां एक ओर लाभ हुआ तो वहीं पर इसके कुछ नुकसान भी हुए। पुरानी रूढ़ियों एवं परम्पराओं का त्याग, जातिप्रथा, वर्ण व्यवस्था, अन्धविश्वास एवं अनेक सामाजिक कुरीतियाँ जैसे सती प्रथा, बाल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्यावृत्ति आदि को जहां एक तरफ समाप्त करने में सहयोग मिला, वहीं पर नई शिक्षा व्यवस्था एवं नये प्रकार की जीवन शैली से मानवीय मूल्यों का पतन भी हुआ। स्वातंत्र्योत्तर भारत में बढ़ती मूल्य हीनता को केन्द्र में रखकर श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने अधिकांश साहित्य का सृजन किया है। उनके उपन्यासों में ग्रामीण परिवेश को यदि हम देखते हैं तो उस समय समाज में जमीदारों एवं सेठ–साहूकारों का वर्चस्व था। जिसके द्वारा किसानों, मजदूरों एवं सामन्तों द्वारा उन पर अत्याचार भी किये जाते थे। "रागदरबारी" में श्रीलाल शुक्ल जी लिखते है कि एक जमाना था कि किसी भी बाभन–ठाकुर के निकलने पर वहां के लोग अपने दरवाजे पर खड़े हो जाते थे, हुक्कों को जल्दी से जमीन पर रख दिया जाता था, चिलमें फेंक दी जाती थीं, मर्द हाथ जोड़कर 'पायलागी महाराज' का नारा लगाते थे। औरतें बच्चों को गली से हाथ पकड़ कर खींच लेती थीं और कभी–कभी घबराहट में उनकी पीठ पर घूंसे भी बरसाने लगती थीं और महाराज चारों तरफ आशीर्वाद लुटाते हुये और इस बात की पड़ताल करते हुये कि पिछले चार महीने पहले के मुकाबले जवान दिखने और कौन लड़की ससुराल से वापस आ

गयी, त्रेतायुग की तरह वातावरण पर सवारी गांठते हुये निकल पड़ते।[9] इसी प्रकार गांव की अशिक्षा व्यवस्था पर भी प्रश्न उठाते हुये वे लिखते हैं कि वास्तव में स्वाधीनता के बाद जिस प्रकार से शिक्षा का विकास होना चाहिये था वैसा नहीं हुआ। आज भी गांव के अधिकतर लोग कागज पर अंगूठा लगाते हैं। "दस्तखत कौन करता है? किसी ने हमारी सात पीढ़ी में दस्तखत नहीं किया कि हमी करेंगे? देख लो पांच सौ कागज रखे हैं। हर एक में मैंने अंगूठे का निशान लगाया है।"[10] स्वतंत्र भारत ग्रामीण परिवेश भी स्वास्थ्य सुविधाओं से वंचित रहा। 'रागदरबारी' में शिवपालगंज के अस्पताल की व्यवस्था को उद्घाटित करते हुए श्रीलाल शुक्ल जी लिखते हैं कि ''अस्पताल में यदि कोई डॉक्टर हुआ भी तो पानी की बोतल पकड़ा कर कहेगा कि लो भाई राम का नाम लेकर पी जाओ। राम का नाम तो लेंगे ही क्योंकि उनके पास देने के लिए दवा ही नहीं होगी तो चुराकर बेचने के लिए पहले ही निकाल कर रख ली गयी होगी। तभी तो कहा गया है कि शहर में हर दिक्कत के आगे एक राह है और देहात में हर राह के आगे एक दिक्कत।''[11] 'सूनी घाटी का सूरज' उपन्यास में ग्रामीण जीवन में व्याप्त छुआ–छूत, ऊँच–नीच के भेद भाव को दिखाया गया है। ''अरे चमरवा ने मेरे ऊपर गुठली थूक दी। उसके दांत तोड़ दूगाँ **बाभन और ठाकुरों के लड़ने हरीराम को पकड़ लेते** हैं वह चमार का लड़का था।''[12] इसी प्रकार 'अज्ञातवास' में दिखाया गया है कि सबसे डरना, अपने से ऊँची जाति वालों से ऊँचे वर्ग वालों से महाजनों से, वैद्यों से, थाने से, तहसील से, भूत प्रेत से, महामारी से, भाग्य से, भगवान से डरना, जिससे न डरना उसके लिए डर बनकर रहना। कदम–कदम पर झगड़े एवं मुकदमे की बातें। नहर के पानी के झगड़े, खेतों की मेड़ के लिए होने वाली फौजदारियाँ, अपनी जमीन पर जानवरों के विकास को लेकर होने वाले हत्याकांड आदि बातों से स्पष्ट है कि किसान, मजदूर, अशिक्षित एवं अज्ञानी होने के कारण लड़ाई झगड़ों में लिप्त हो जाते थे जिससे उनका शोषण किया जाता था।

3–राजनैतिक परिवेश–

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। लोकतंत्र इसकी सबसे बड़ी शक्ति है। जिस नेता के पास जितना अधिक जनमत होता है वह उतना ही अधिक शक्तिशाली माना जाता है। स्वतंत्रता के बाद देश में जब से संविधान लागू हुआ तब से भारतीय जनता को अपने देश से अनेक आशा एवं आकाक्षाएं होने लगी थीं। किन्तु मूल्यहीन भारतीय राजनीति ने उनके सपनों पर पानी फेर दिया और देश की बागडोर पूँजीपतियों के हाथ में चली गयी। अमीर लोग शासन सत्ता पर काबिज होने लगे। उन्हे आम

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

जनता को दुखदर्द से कोई लेना देना नहीं रहा। गांधीवादी मूल्यों का राजनीति के क्षेत्र से पतन होने लगा और स्वार्थपरता धनलोलुपता, भ्रष्टाचार, घूसखोरी, बेईमानी चापलूसी, गुंडागर्दी आदि भारतीय राजनीति के अंग बन गये। श्री जगदीश नारायण श्रीवास्तव जी लिखते हैं कि '' पिछले बयालीस वर्षों में भारतीय राजनीति में खोट आती गयी है तो इसलिए कि भारतीय जनता में अभी तक अपने नागरिक होने का दायित्व बोध नहीं जन्मा है। वह कुटुम्ब, जाति, कबीले धर्म, समुदाय आदि के परिवेश से निकल कर नागरिकता के नये अस्तित्व बोध को आत्मसात, नहीं कर पायी, इसलिए हमारी राजनीति की अपरिपक्वता उसकी विसंगतियाँ समाज की अपरिपक्वताएँ एवं उसकी विसंगतियाँ बनी हुई हैं।[14]

वर्तमान की शासन व्यवस्था पूंजीपति वर्ग के हाथों में है और आम जनता उनके हाथों की कठपुतली बन कर रह गयी है। श्री लाल शुक्ल 'रागदरबारी' में लिखते हैं कि '' पहले भी वे जनता की सेवा जज की इजलास में जूरी और असेसर बनकर, दीवानी के मुकदमों में जायदादों के सिपुर्ददार होकर और गांव के जमीदारों के लम्बरदार के रूप में करते थे। अब वे को–आपरेटिव मैनेजिंग डाइरेक्टर और कालेज के मैनेजर थे। वास्तव में वे इन पदों पर कार्य नहीं करना चाहते थे क्योंकि पदों का लालच न था। पर उस क्षेत्र में जिम्मेदारी के कामों को निभाने वाला कोई आदमी ही न था और वहां जितने नवयुवक थे वे पूरे देश के नवयुवकों की तरह निकम्मे थे, इसलिए उन्हे बुढ़ापे में इन पदों को संभालना पड़ा।[15] इससे स्पष्ट है कि स्वतंत्रता के बाद शासन–सत्ता, न्याय–व्यवस्था आदि पर अधिकार पूंजीपति एवं जमीदारों का ही था। स्वतंत्रता के बाद गाँधीवादी विचारों का प्रभाव भी हमारे देश पर था किन्तु राजनीतिक स्वार्थपरता के आगे उसका भी पतन होता दिखाई पड़ रहा है, जिसको लेखक ने रागदरबारी में गांधी चबूतरे के प्रसंग पर उठाया है। ''गांधी, जैसा कि कुछ लोगों को आज भी याद होगा, भारतवर्ष में ही पैदा हुए थे और उनके अस्थि कलश के साथ उनके सिद्धान्तों को भी संगम में बहा देने के बाद यह तय हुआ कि गांधी के नाम पर सिर्फ पक्की इमारतें ही बनाई जायेंगी और उसी हल्ले में शिवपालगंज में यह चबूतरा बन गया था।''[16] गांधी जी के प्रति न तो किसी के मन में श्रद्धा है और न तो कोई उनके सिद्धान्तों का अनुसरण करना चाहता है। लोग केवल अपने राजनीतिक स्वार्थों की सिद्धि हेतु गांधी को याद करते हैं। आज भारतीय राजनीति का जो घटिया दौर और पाखण्डवाद चल रहा है उसका पर्दाफाश श्रीलाल शुक्ल जी ने किया है।

4–आर्थिक परिवेश–

स्वतंत्र्योत्तर भारत में समाज की आर्थिक दशा दयनीय थी। समाज के कुछ वर्ग ही आर्थिक रूप से सम्पन्न थे। जिसके पास पैसा होता था वह अधिक शक्तिशाली समझा जाता था तथा समाज में उसकी अच्छी प्रतिष्ठा थी। इसके अतिरिक्त गांव का मजदूर किसी प्रकार से मजदूरी करके अपने परिवार का भरण पोषण करता था। कुछ नई पीढ़ी के लोग शहरों में जाकर दफ्तरों एवं फैक्टरियों में नौकरी करके अपनी जीविका का निर्वाह करते थे। कुछ लोग शहरों में जाकर रिक्शा चलाने का कार्य करते थे। रागदरबारी में श्री लाल शुक्ल ने लिखा है कि 'आजादी मिलने के बाद इस देश में साइकिल–रिक्शा चलाने वालों का वर्ग तेजी से पनपा। उससे यही साबित होता है कि हमारी आर्थिक नीतियाँ बहुत बढ़िया हैं और यहां के घोड़े बहुत ही घटिया।[17] 'पहला पड़ाव' में श्रीलाल शुक्ल ने लिखा है "जशोदा के आदमी को यहां आने के लिए उन्हें 500 रू दिया था कुछ दे भी चुका था उस पर 1200 निकाले हम बूढ़े ठिहरे दो जने। उस पर 1500 निकले।" इससे पता चलता है कि मजदूरों का आर्थिक शोषण किया जाता था। ठेकेदार उन्हें गांव से शहर लाकर मजदूरी करवाता था और उनसे दुगुनी रकम वसूल करता था। सामन्त एवं जमीदारों द्वारा कृषक एवं मजदूरों का आर्थिक शोषण किया जाता था। जिसका सजीव वर्णन श्रीलाल शुक्ल ने अपने उपन्यासों में किया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि श्रीलाल शुक्ल जी ने अपने उपन्यासों में प्रसंगानुकूल परिवेश चित्रण बहुत सजीवता एवं सजगता के साथ किया है। साहित्य में परिवेश चित्रण कथा की पृष्ठभूमि को रोचक बनाने के लिए तथा पात्रों की मानसिकता को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है। शुक्ल जी ने अपने साहित्य में प्राकृतिक, सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक आदि अनेक रूपों में परिवेश का चित्रण कर कहानी को रुचिकर एवं सहज ग्राह्य बनाया है। स्वाधीनता के बाद देश में बढ़ते शहरीकरण, औद्योगीकरण, धार्मिक स्थिति, राजनैतिक स्थिति, शासन सत्ता, न्याय व्यवस्था, ग्रामीण जीवन, स्वास्थ्य व्यवस्था तथा गांधीवादी सिद्धान्तों का पतन आदि को परिवेश चित्रण के माध्यम से वर्णित किया गया है।

सन्दर्भ सूची–

1. साहित्य सहचर पृ0सं0–50
2. द्वितीय महायुद्धोत्तर हिन्दी साहित्य का इतिहास पृ0सं0–38

THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 3, Issue 02, July 2020

3. समय पत्रिका–31मई 2019
4. अज्ञातवास–12
5. पहला पड़ाव–113
6. वही–100
7. सूनी घाटी का सूरज–60
8. वही–56
9. रागदरबारी–259
10. वही–221
11. वही–297
12. सूनी घाटी का सूरज–21
13. अज्ञातवास–268
14. अज्ञातवास–21
15. रागदरबारी–261
16. वही–100
17. वही–196